The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

17. छत्तीसगढ़ी लोकगीत परंपरा में विवाह संस्कार गीत: एक सांगीतिक अध्ययन

आशीष जायसवाल
स्वतंत्र शोधकर्ता, सहायक प्राध्यापक (अतिथि)
शासकीय अग्रसेन महाविद्यालय, बिल्हा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
ईमेल - ashishjaiswal7415@gmail.com

सार सारांश

भारत सामाजिक-सांस्कृतिक एवं भाषाई विविधता से परिपूर्ण एक विशाल और विकसित देश है, जिसमें सभी राज्यों की अपनी अलगरीतिरिवाज एवं परंपराएँ हैं। इन राज्यों में से ही, एक राज्य प्राकृतिक सौन्दर्यता से समृद्ध राज्य छत्तीसगढ़ है। यह राज्य आदिवासी बाहुल्य एवं जंगल में निवास करने वाले समुदाय से समृद्ध हैं जिनकी अपनी लोक गीत, संगीत एवं परंपरा है, जिनमे हमें बहुत ज्यादा विविधता देखने को मिलता हैं। मानव के जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेको संस्कार की प्रक्रिया आती हैं, उन्ही में से एक विवाह संस्कार जुड़ा हुआ हैं, यह संस्कार में गीत-संगीत बहुत विस्तृत है। छत्तीसगढ़ केपावन भूमि में होने वाले विवाह संस्कार में विभित्र रस्म एवं रिवाज़ होते हैं,जिसमे अनेको भाषाई विविधता से समृद्ध विवाह गीत भी प्रचलित हैं। छत्तीसगढ़ के विवाह गीत में एक तरफ जहाँ ख़ुशी के भाव दिखाई देता हैं वही दूसरी ओर गीत में कन्या पक्ष के दुःख, वेदना एवं करुणा भी हमें पर्याप्त मात्रा में देखने को मिलता हैं। विवाह गीत की शुरुवात चुलमाटी गीत से प्रारंभ होती हैं और कन्या पक्ष के बिदाई गीत पर समाप्त हो जाता हैं। छत्तीसगढ़ी विवाह गीत में परम्परागत भाषा एवं संस्कृति का हस्तांतरण होता हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता रहता हैं। गीत में क्योकि भाव, वेदना एवं संस्कार की अभिव्यक्ति होती हैं इसलिए इसमें हमें कला भी दिखाई देता है। इस संदर्भ में विवाह संस्कार के विभित्र रस्मों में गाए जाने वाले गीतों का समीक्षात्मक विवेचन है।

मुख्य शब्द :विवाह, विवाह गीत, छत्तीसगढ़, छत्तीसगढ़ी गीत, संस्कार गीत।

प्रस्तावना :छत्तीसगढ़, जिसे 'धान का कटोरा' के रूप में जाना जाता है, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, विविध आदिवासी परंपराओं और लोक कलाओं से समृद्ध है। यह राज्य न केवल प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है, बल्कि अपनी लोक संगीत परंपरा के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक पहचान को जीवित रखता है। छत्तीसगढ़ी लोक गीत, जो सदियों से मौखिक परंपरा के रूप में संरक्षित हैं, समाज की भावनाओं, रीति-रिवाजों और जीवन दर्शन को प्रतिबिंबित करते हैं। इनमें से विवाह गीत (बिहाव गीत) एक प्रमुख श्रेणी है, जो विवाह समारोहों के दौरान गाए जाते हैं और छत्तीसगढ़ी संस्कृति की आत्मा को दर्शाते हैं।छत्तीसगढ़ीविवाह गीत विशेष रूप से विवाह की विभिन्न अवस्थाओंजैसे– चुलमाटी, तेलचढ़ी, बारात प्रस्थान, विदाई और स्वागत आदि विभिन्न रस्मों के समय गाये जाते हैं। ये गीत मौखिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते हैं, जो छत्तीसगढ़ी समाज की सांस्कृतिक निरंतरता को दर्शाते हैं। छत्तीसगढ़ी विवाह गीतों की परंपरा में देवी-देवताओं की स्तुति, आशीर्वाद, हंसी-मजाक, प्रेम एवं

करुणा-वेदना से ओतप्रोत होता हैं।छत्तीसगढ़ी विवाह गीत एक समृद्ध कलात्मक अभिव्यक्ति हैं। इनमें संगीत, काव्य और नृत्य का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। जिसमे विभिन वाद्य यंत्र जैसे मांदर, ढोलक, बांसुरी, खंजरी और हारमोनियम आदि इन गीतों को जीवंत बनाते हैं। गीतों की भाषा छत्तीसगढ़ी भाषा एवं इसकी उपभाषा है, जो सरल, भावपूर्ण और लोक-उपमाओं से युक्त होती है। छत्तीसगढ़ के विभिन्न संभागों में विवाह के समय जो गीत गाया जाता हैं, उनमे वहां के क्षेत्र, भाषा-बोली और संस्कृति के अनुरूप विविधता देखी जा सकती हैं।

छत्तीसगढ़ी विवाह गीत : प्रकार

छत्तीसगढ़ में विभिन्न जाति, धर्म एवं समुदाय के लोग निवास करते हैं, यहाँ मुख्य रूप से आदिवासी संस्कृति एवं सभ्यता भी हमें देखने को मिलता हैं। विविधता के कारण यहाँ मुख्य रूप से विवाह में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख गीत का विवरण निम्नलिखित हैं :

चुलमाटी गीत –विवाह का प्रारंभ चुलमाटी से प्रारंभ होता हैं जिसमे विवाह के कार्य एवं अनुष्ठान के लिए प्रयुक्त होने वाले चूल्हा बनाने के लिए मिट्टी लेने गावं के प्रमुख देवस्थल या जलाशय के किनारे जाते हैं। मिट्टी को खोदने के लिए सब्बल औजार के साथ परिवार के सदस्य एक साथ जाते हैं, इस कार्य को करते समय जो गीत गाया जाता हैं उसे चुलमाटी गीत कहा जाता हैं। चुलमाटी गीत मुख्य रूप से व्यंग प्रधान होता हैं, जिसमे हंसी-ख़ुशी का माहौल बना रहता हैं। यह गीत कुछ इस प्रकार हैं –

“तोला साबर धरे ला, तोला साबर धरे ला
तोला साबर धरे ला,नई आवय मित धीरे धीरे धीरे धीरे
अपन बहिनी ल तीर धीरे धीरे
धीरे धीरे अपन बहिनी ल तीर धीरे धीरे...”

मंगरोहन गीत –यहगीत भी विवाह से सम्बंधित हैं, मंगरोहन एक मंगल कास्ठ हैं जो मंडप में गाड़ा जाता हैं जो इस पवित्र विवाह का साक्षी बनता हैं। इस मंगरोहन को गाड़ते समय जो गीत गाया जाता हैं उसे मंगरोहन गीत कहा जाता हैं। यह गीत कुछ इस प्रकार हैं –

“हरियर हरियर, जामुन डारा दिखत
जामुन डारा दिखत
पिंयर पिंयर, बांसे रे भाई
पिंयर पिंयर बांसे
हां हां पिंयर पिंयर, बांसे रे भाई
पिंयर पिंयर बांसे...”

तेलचघी गीत - "मंडपच्छदान" और मंगरोहन के पश्चात् वर और कन्या दोनों पक्षों में तेलचघी का रस्म किया जाता हैं, जिसमे हल्दी और तेल का लेप वर और वधु दोनों को लगाया जाता हैं। तेलचघी के समय गाये जाने वाले

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

गीत को तेलचघी गीत कहा जाता हैं और इस गीत में परिवार के सदस्य भगवान के समक्ष वर और वधु के लिए मंगलकामनाये करते हैं। यह गीत इस प्रकार हैं –

“एक तेल चढ़गे
एक तेल चढ़गे, हो हरियर हरियर
हो हरियर हरियर
मंड़वा मे दुलरू तोर बदन कुम्हलाय
रामे-वो-लखन के
रामे-वो-लखन के दाई तेल वो चढ़त हे
दाई तेल वो चढ़त हे
कहवा के दियना दीदी करथे अंजोर...”

मायमौरी गीत - इस गीत में परिवार की महिलाएं अपने आराध्य देवी-देवता एवं पूर्वजों को निमंत्रण देते हैं, उनसे यह प्रार्थना की जाती हैं की वे इस विवाह को निर्विघ्न संपन्न कराये और अपना आशीष वर और वधु पर बनाये रखे। यह गीत कुछ इस प्रकार हैं –

“हाथे जोरि न्यौतेंव मोर देवी देवाला
हो देवी देवाला
घर के पुरखा मन होओ सहाय…
बिनती करेंव मंय माथ नवायेंव
हो माथ नवायेंव
कर लेहो एला स्वीकार…”

मायन गीत – मयान के समय गाये जाने वाला गीत को मायन गीत कहते हैं, यह गीत मातृकापूजन के समय गाया जाता हैं। यह गीत कुछ इस प्रकार हैं –

“ठाकुर देवता के पईयां परत हव वो
पईयां परत हव के दुलरू के होई हव सहाय
हो देवता दुलरू के होई हव सहाय
वो तो दुलरू के होई हव सहाय
हो देवता दुलरू के होई हव सहाय...”

नहडोरी गीत – यह रस्म वर एवं वधु दोनों पक्षों में होता हैं, इस रस्म में वर और वधु का हल्दी-तेल को नहडोरी (नहलाने) के बाद कंकन (डोरी) बाँधा जाता हैं, इसके बाद उन्हें शादी के लिए तैयार किया जाता हैं। नहडोरी के समय गाये जाने वाले गीत को ही नहडोरी गीत कहा जाता हैं। यह गीत कुछ इस प्रकार हैं-

“दे-तो दे-तो दाई अस्सी वो रुपैया के

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

सुंदरी ला लातेंव वो बिहाय
कि अ-वो दाई सुंदरी ला लातेंव वो बिहाय..."

मौर सौपनी गीत - छत्तीसगढ़ी मौर सौंपनी गीत वह गीत है, जो विवाह के दौरान वर पक्ष की ओर से दूल्हे के सिर पर मौर (मुकुट) बाँधते समय गाया जाता है। यह गीत छत्तीसगढ़ी परंपरा का हिस्सा है जो दूल्हे को विवाह के दौरान आशीर्वाद देने के रूप में गाया जाता हैं और यह रस्म मनाया जाटा है। यह गीत कुछ इस प्रकार हैं –

"पहिरव दाई हो सोनेकली लुगरा,
सौपीं लेबे दाई मोर माथे के मउर..."

बारात प्रस्थान गीत – वर पक्ष की ओर से जब कन्या पक्ष घर जाते हैं उस समय वर पक्ष के घर से निकलते समय जो गीत गाया जाता हैं यह वही गीत हैं। इस गीत में वर पक्ष की महिलाये पूर्वानुमान करती हैं और गीत गाती हैं। यह गीत कुछ इस प्रकार हैं –

"गांवे अवधपुर ले चले बरतिया चले बरतिया की
गांवे जनकपुरी जाये वो दाई
गांवे जनकपुरी जाये
गांवे जनकपुरी जाये वो दाई
गांवे जनकपुरी जाये..."

परघौनी गीत – यह गीत कन्या पक्ष के द्वारा बारात के स्वागत के लिए गाया जाता हैं। यह गीत कुछ इस प्रकार हैं–

"धन्य घड़ी आज मोर घरे आये हो, मोर संत स्नेही..."

भड़ौनी गीत – यह गीत विवाह के दौरान खाना खाते समय वर/वधू पक्ष द्वारा गाया जाता हैं, जो केवल हंसी-मजाक के लिए गाया जाता हैं। यह गीत कुछ इस प्रकार हैं –

"बने बने तोला जानेंव समधी, मड़वा में डारेंव बांस रे
बने बने तोला जानेंव समधी, मड़वा में डारेंव बांस रे
जालापाला लुगरा लानेंव, जरगे तोरे नाक रे
जालापाला लुगरा लानेंव, जरगे तोरे नाक रे..."

भांवर गीत - भांवर गीत, छत्तीसगढ़ी विवाह गीतों में से एक हैं यह गीत तब गाया जाता हैं जब दूल्हा और दुल्हन पवित्र अग्नि को साक्षी मानकर सात फेरे लेते हैं। इन गीतों में फेरों की संख्या के आधार पर अलग-अलग छंद होते हैं, जो दूल्हा-दुल्हन के साथ-साथ परिवार के सदस्यों को भी शुभकामनाएं और आशीर्वाद देते हैं। यह गीत कुछ इस प्रकार हैं –

"भांवर परत हे, भांवर परत हे
हो नोनी दुलर के, हो नोनी दुलर के
होवत हे दाई, मोर रामे सीता के बिहाव

होवत हे दाई, मोर रामे सीता के बिहाव..."

विदाई गीत – सबसे अधिक मार्मिक और करुणा एवं वेदना से ओतप्रोत यह गीत कन्या पक्ष की और से दुल्हन के बिदाई के समय गाया जाता हैं। इस गीत में माँ, बाप और परिवार जन के लोगो की दु:ख परिलक्षित होता हैं। यह गीत कुछ इस प्रकार है –

"बर तरी खड़े है बरतिया, बर तरी खड़े है बरतिया
के नीम तरी खड़े हैं कहार, अइसन सईया निरमोहिया..."

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह ज्ञात होता हैं की छत्तीसगढ़ के विवाह संस्कार गीत लोक संस्कृति का एक जीवंत दर्पण हैं, जो न केवल विवाह की विभिन्न रस्मोंजैसे -चुलमाटी,मायन, भांवर, विदाई आदिको उत्साहपूर्ण प्रदर्शित करता हैं, बल्कि सामाजिक मूल्यों,पारिवारिक संबंधो एवं प्रेम और भावनात्मक संघर्षो को भी सूक्ष्मता से उकेरते हैं। इन गीतों में बिहाव (विवाह) की बहुआयामी परंपराओं का चित्रण मिलता है, जिसमे उल्लासपूर्ण स्वागत गीतों से लेकर विदाई के हृदयविदारक गीतों में जीवन की सुख-दुख की पूरी यात्रा प्रतिबिंबित होती है। ये गीत मुख्यतः स्त्रियों द्वारा गाए जाते हैं, जिसमे ये स्त्रियाँ अपनी आकांक्षाओं, विरह की पीड़ा और सामाजिक बंधनों को अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्त करती हैं।छत्तीसगढ़ के विवाह संस्कार गीत नारी-केंद्रित लोक साहित्य के अमूल्य कोष हैं, जो परंपरा और परिवर्तन के बीच संतुलन साधते हुए, आने वाली पीढ़ियों के लिए सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने की प्रेरणा देते हैं। इनके संरक्षण हेतु दस्तावेजीकरण, शैक्षिक एकीकरण और समुदाय-आधारित प्रयासों की आवश्यकता है, ताकि यह जीवंत ध्वनि-धारा अनंत काल तक गूंजती रहे।

संदर्भ :

1. SAHU, SUNIL KUMAR.(2025). छत्तीसगढ़ी लोक गीतों का सांगीतिक अध्ययन. SWAR SINDHU, 13(01), 298-301.
2. स्वराधना एवं सिंह, ओजेश प्रकाश.(2025). बिहार के विवाह संस्कार गीत. अनहद-लोक, 11(21), 166-170.
3. पटेल, हरी राम.(2023). छत्तीसगढ़ विशिष्टअध्ययन. HR Publication, पृष्ठ 382-392.
4. कविता कोश. (n.d.). *बिहाव के गीत / छत्तीसगढ़ी*. http://kavitakosh.org/kk/बिहाव_के_गीत_/छत्तीसगढ़ी
5. CG Songs. (n.d.). *मंगरोहन*. https://cgsongs.wordpress.com/tag/मंगरोहन/
6. CG Songs. (n.d.). *तेलचढ़ी गीत*. https://cgsongs.wordpress.com/tag/तेलचढ़ी-गीत/

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

7. CG Songs. (n.d.). *मायमौरी*. https://cgsongs.wordpress.com/tag/मायमौरी/
8. CG Songs. (n.d.). *नहडोरी*. https://cgsongs.wordpress.com/tag/नहडोरी/
9. CG Songs. (n.d.). *बरात निकासी*. https://cgsongs.wordpress.com/tag/बरात-निकासी/
10. CG Songs. (n.d.). *भड़ौनी गीत*. https://cgsongs.wordpress.com/tag/भड़ौनी-गीत/
11. CG Songs. (2011, June 23). *भंवर परत हे*. https://cgsongs.wordpress.com/2011/06/23/bhanwar-parat-he/

The Asian Thinker